JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"हिंदी कविता : प्रसार के नव–माध्यम"

हेमा जोशी (अनुसंधित्सु)

डी.एस. बी. कैम्पस, कुमाऊं विश्वविद्यालय,

नैनीताल, उत्तराखंड

ईमेल– hemanainwaljoshi@gmail.com

सम्पर्क– 8810503857

सारांश – नब्बे के दशक में भारत में उदारीकरण, बाजारीकरण और भूमंडलीयकरण की प्रक्रिया अपने साथ संचार क्रांति को भी लेकर आई या कहना चाहिए कि संचार माध्यमों के रथ पर चढ कर इन्होने भारत में अपनी यात्रा प्रारम्भ की। वर्तमान में प्रसार के इन नव माध्यमों (केबल, इंटरनेट, मोबाइल) से हिन्दी कविता की गतिज ऊर्जा निरंतर बढ़ती ही जा रही है। किसी भी भाषा के विकास और प्रचार–प्रसार में संचार माध्यमों का विशिष्ट योगदान होता है। हिन्दी भी इसका अपवाद नहीं। उन्नीसवीं सदी के आखिरी तथा बीसवीं सदी शुरुआती दशकों में हिन्दी गद्य और हिन्दी काव्य के प्रसार में पत्र–पत्रिकाओं के योगदान का ऐतिहासिक महत्व है। नब्बे के दशक में सरकार की उदारीकरण की नीतियाँ, तकनीकी उपलब्धता और फैलते बाजार के कारण देश में हिन्दी कविता के प्रचार–प्रसार के माध्यमों में दिन–प्रतिदिन बढ़ोतरी हुई है। आज की कविता प्रबुद्ध प्रकोष्ठ वर्ग से निकलकर आम आदमी तक अपनी पहुँच बढ़ाने में कामयाब हुई है। इसका सबसे प्रभावी औजार है, प्रौद्यौगिकी–प्रवाह और इसी का अभिन्न अंग है सूचना–प्रवाह। यह सूचना इंटरनेट के माध्यम से पूरे भूमंडल के फासले को चंद लम्हों में नापने का माद्दा रखती है, लेकिन चूँकि इंटरनेट का उपयोग करते समय प्रमुखतः अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहा है पर आज हिन्दी देर से ही सही अंग्रेजी के गढ़ में सेंध लगाने में कामयाब हो रही है। इसका सबूत है विभिन्न वेब–साइटों पर मौजूद हिन्दी के अखबार और पत्र–पत्रिकाएँ। इससे हिन्दी कविता का प्रचार–प्रसार देश के साथ–साथ विदेशों में भी तेजी से हो रहा है। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्स–ऐप, इंस्ट्राग्राम, यू–ट्यूब आदि सोशल–मीडिया के माध्यमों से हिंदी कविता के प्रचार–प्रसार के साथ ही पिछले वर्षो में जिस तेजी से हिन्दी के ब्लॉग इंटरनेट पर फैले हैं, उनसे एक उम्मीद बँधी है कि 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' पुनः विस्तीर्ण होगा और हिंदी कविता पुनः अपनी स्थापना करने में सफल होगी।

बीज शब्द – समकालीन (Contemporary),प्रौद्यौगिकी, सोशल–मीडिया, ब्लॉग्स।

प्रस्तावना – इंटरनेट आज के युग में सूचना प्रसार का सबसे बड़ा, लोकप्रिय और सशक्त माध्यम है। वर्तमान युग मे इंटरनेट पर किसी भी सूचना को फैलने से रोका नहीं जा सकता। आज हिन्दी की हजारों काव्य रचनाएँ इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध हैं। देखा गया है कि प्रिंट माध्यम के पाठक और इंटरनेट के पाठक अलग–अलग होते हैं। जो लोग पुस्तक खरीद कर पढ़ने में रुचि रखते हैं उन्हें इंटरनेट पर उपलब्ध मूल्यरहित सामग्री से संतोष नही होता है और वे पुस्तक खरीद कर ही पढ़ना अधिक पसंद करते हैं। लेकिन आज के इस महंगाई के युग में प्रत्येक पाठक के लिए पुस्तकें खरीदकर पढ़ना मुश्किल बात है। वहीं इंटरनेट के माध्यम से मूल्यरहित पुस्तकें (ई–बुक) और सामग्री (ई–कन्टेन्ट) आसानी से प्राप्त हो जाती है और वहाँ तक भी पहुँचती है जहाँ प्रिंट पुस्तक नहीं पहुंच पाती।

काव्य प्रसार के माध्यम–

काव्य प्रसार के माध्यमों को मुख्यतः हम दो भागों में बाँट सकते हैं।

1. पारम्परिक माध्यम

2. आधुनिक माध्यम

1. **पारम्परिक माध्यम**– पारम्परिक प्रसार माध्यमों के अंतर्गत समाचार पत्र, पत्र–पत्रिकाएँ, कवि–सम्मेलन आदि आते हैं। प्रारम्भ से ही पत्र–पत्रिकाओं और समाचार पत्रों ने कविता को आम जन पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन माध्यमों से कविता के प्रचार और प्रसार दोनों को बल मिला। कवि सम्मेलन में लोग काव्य श्रुति के माध्यम से कविता के रस में सरोबार होकर आनंदित और भाव–विभोर हो उठते थे जिस कारण कविता अपने लोक से हमेशा जुड़ी रही।

2. **आधुनिक माध्यम**– जैसे–जैसे समय बदलता गया, कविता भी बदलती गई और साथ ही इसके प्रसार के माध्यम भी बदलते चले गए। नब्बे के दशक के बाद से आर्थिक उदारता बनाम निजीकरण के प्रभाव से कविता जिस चाल में ढली उसके इस बदले हुए रुप को हमने समकालीन कविता नाम दिया।

समकालीन कविता आम व्यक्ति के दैनंदिनी से जुड़ी कविता है। 'वैसे 'समकालीन' शब्द का पर्याय अंग्रजी के 'कॉन्टेम्परेरी' से है, जिसका अर्थ है – 'समसामयिक' अर्थात् अपने समय का। समकालीन का अर्थ केवल अपने समय के साथ चलना ही नहीं अपितु अपने समय की चुनौतियों से मुकाबला करना भी है।'

'समकालीनता का संबंध काल विशेष से होने के साथ व्यक्ति–विशेष के काल– यापन तथा साहित्य, समाज अथवा प्रवृत्ति विशेष के संशिलिष्ट कालखंड से भी रहता है। समकालीनता के प्रमाणीकरण की समस्या अत्यंत जटिल एवं द्वंद्वात्मक क्योंकि समकालीनता पूरे युग का आत्यंतिक सामाजिक–ऐतिहासिक बोध न होकर स्थिति विशेष का आयाम है।'

समकालीन कविता अनेक राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय संदर्भों जैसे – विश्व–शांति, निशस्त्रीकरण, पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक संपदा संरक्षण, अश्वेत संघर्ष के साथ–साथ पंजाब समस्या, भोपाल गैस त्रासदी, साम्प्रदायिक हिंसा, और बाजारवाद से बढ़ती हृदयहीनता, अमानवीयता, "शोषण, क्रूरता आदि महत्वपूर्ण मुद्दों को ध्यान में रखकर लिखी गई कविता है।"

यह कविता आम आदमी के जीवन के रोजमर्रा के दृश्यों, घटनाओं और क्रिया–प्रतिक्रिया के चित्रों से भरी हुई कविता है। यह एक आम आदमी की कविता है। जिसकी दैनंदिनी समाज, देश, विश्व सभी को प्रभावित रखने की सामर्थ्य रखती है।

इस कविता को वर्तमान समय में अपने प्रचार और प्रसार के लिए विस्तृत क्रीड़ास्थली मिली। औद्योगिकी और प्रौद्योगिकी के मेल ने इस कविता को देश में ही नहीं विदेशों में भी पहचान दिलाई। इंटरनेट के माध्यम से यह कविता जन–जन तक पहुँची है, चाहे वह धनाढ्य वर्ग हो या गरीब वर्ग, चाहे शिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित वर्ग।

- **इंटरनेट द्वारा कविता का प्रसार–**

आज इंटरनेट पर आपको हिंदी कविता से जुड़ी तमाम वेबसाइट्स मिल जाएंगी। इनमें से कुछ प्रमुख वेबसाइट्स निम्न है –

1. कविता कोश:- (https://kavitakosh.org)

भारतीय काव्य को एक जगह संकलित करने के उद्देश्य से प्रारम्भ की गई एक अव्यवसायिक, सामाजिक एवं स्वयंसेवी परियोजना है। हिन्दी काव्य कोश का एकमात्र उद्देश्य हिन्दी काव्य को इंटरनेट पर एक जगह प्रतिष्ठित करना है ताकि पूरा संसार इसका लाभ उठा सके। कविता कोश की स्थापना के पीछे एक ही आशा है कि कोश के अस्तित्व में आने से हिन्दी काव्य का प्रचार–प्रसार तेजी से पूरे विश्व में हो सकेगा। कविता कोश में संकलित सभी रचनाओं के साथ रचनाकारों का नाम भी दिया जाता है।

2. काव्यालयः– (https://kavyaalaya.org)

इसे कविता का घर कह सकते हैं। इस वेबसाइट द्वारा भी हिंदी कविता से जुड़ा जा सकता है।

❸ दिल्ली पोयट्री स्लैमः– (https://www.delhipoetryslam.com)

दिल्ली पोयट्री स्लैम पूरे भारत के कवियों का सबसे बड़ा नलाइन.. समूह है जहाँ कविता एक बड़े समूह से जुड़ने में कामयाब हुई है।

❹ हिन्दी काव्यः– (http://www.bharatdarshan.co.n2/collection/articles/41/poetry.html)

हिन्दी कविता, हिन्दी दोहे, कविता, गजल, व अन्य हिन्दी काव्य हेतु वेबसाइट।

❺ एंड्रॉयड फोन द्वारा कविता का प्रसार:– आज एंड्रॉयड फोन मे हिंदी कविता के अनेक ऐप्स विद्यमान हैं जिन्हें डाउनलोड कर हिंदी कविता से सीधा जुड़ा जा सकता है।

हिंदी कविता के प्रमुख एंड्रायड एप्स निम्न है–

(1) काव्य संग्रह – हिन्दी कविता (Hindi poems- kavita android apps on google play)

(2) हिन्दी कविताएँ – सी बी इंटरनेशनल

(3) हिन्दी कविताएँ 2018 – संजु राजपूत

(4) Hindi Poems – Android apps on google play

(5) Kavyakosh app – इस ऐप में हिंदी कविताओं का विशाल संग्रह है। इसे भी गूगल से डाउनलोड किया जा सकता है।

(6) Hindi Kavita Mobogenie - इस ऐप की सहायता से हम प्रसिद्ध हिंदी कविताएं निशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं। यह ऐप बिना इंटरनेट की सहायता के भी चल सकता है। (mobogenie.com./offline) app

● ब्लॉग्स के माध्यम से –

हम ब्लॉगर पर ब्लॉग बनाकर एक दूसरे की मदद कर सकते हैं, और अगर आप चाहें ता ब्लॉगर पर ब्लॉग बनाकर कुछ पैसे भी कमा सकते हैं। जिस ब्लॉगर पर आपने ब्लॉग बनाया है, उसका अधिकार गूगल के पास है। ब्लॉगर प्लेटफार्म पर नया ब्लॉग बनाने के लिए आपके पास जी–मेल (Gmail) की आई–डी (id) होनी चाहिए। केवल जी–मेल (Gmail) की आई–डी (id) से आप ब्लॉगर पर अपना ब्लॉग बना सकते हैं। आज ब्लॉग्स के माध्यम से भी हिंदी कविता के प्रचार–प्रसार को बल मिला है।

भारत के प्रसिद्ध कविता ब्लॉग्स -

(1) शब्दांकन (https://www.shabdankan.com) – भरत तिवारी, नई दिल्ली

(2) अक्षरनाद (aksharnaad.com) – जिग्नेश, वडोदरा

(3) हिन्दी कविता (deepawali.co.in) – कर्णिका पाठक, खांडवा

(4) हिन्दी साहित्य काव्य संकलन (hindisahitya.org) – सी बी सिंह, इलाहाबाद

(5) साहित्यमंजरी (sahityamanjari.com) – कुनाल, मुंबई

(6) अनुनाद (annunad.com) – शिरीष कुमार मौर्य, उत्तराखंड

(7) स्वप्न मेरे (swapnmere.blogspot.com) – दिगम्बर, नसवा

(8) रचनाकार (rachanakar.blogspot.com) – रवि, भोपाल

(9) कविता (kavyana.blogspot.com) – अनामिका, नोयडा

(10) कविताएँ और कवि भी ((kavita-vichangam.blogspot.com) – गिरिजेश राव, लखनऊ

(11) हिन्दी युग्म कविता (kavita.hindyugm.com) – शैलेष भारतवासी, नई दिल्ली

(12) काव्यसुधा (kavineeraj.blogspot.in) – नीरज कुमार नीर, रांची

(13) विकिपिडिया (Wikipedia)

● ई–पत्रिकाओं के माध्यम से–

भारत की प्रमुख ई–पत्रिकाएँ (काव्य मैगजीन)

(1) साहित्यकुंज – https://www.quora

(2) अमर उजाला काव्य – http://www.amarujala.com

(3) अनहद कृत्ति – https://www.quora

(4) काव्यालय – kaavyaalaya.org

(5) अंतरजाल – https://www.bharatdarshan.co.nz

●सोशल मीडिया के माध्यम से–

आज हमारे देश के लगभग सभी लोग सोशल मीडिया के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। यू टयूब चैनल्स, फेसबुक, व्हट्सअप, ट्विटर आदि माध्यमों ने भी हिंदी कविता के प्रसार में बहुत बड़ा योगदान दिया है। सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई कविताओं को मिलने वाले लाइक्स (likes) और व्यूज (views) के आंकड़ों से स्पष्ट है कि आज की कविता हर वर्ग के पा तक पहुंच रही है और उन्हें भा रही है।

हिंदी कविता से संबंधित कुछ प्रसिद्ध यू– ट्यूब चैनल्स–

1) यू-ट्यूब चैनल – हिन्दी कविता

मनीष गुप्ता इस चैनल के संस्थापक हैं। अपने यूटयूब चैनल 'हिन्दी कविता' के माध्यम से कवियों और उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं को सामने लाने का प्रयास करते हैं।

उन्होंने फिल्म उद्योग की प्रसिद्ध प्रतिभाओं से समकालीन तथा महानतम दोनों कवियों की कविताएँ पढ़वाई हैं। जिस कारण सभी वर्ग के लोगों ने इन कविताओं को बहुत पसंद किया और दिन–प्रतिदिन हिंदी कविता (पोयट्री) के प्रेमी (लवर्स) की संख्या बढ़ती ही जा रही हैं।

उदाहरण के लिए अभिनेता मनोज वाजपेयी ने दिनकर की 'रश्मिरथी' को पढ़ा तुरंत ही 1,90,000 व्यूज (views) प्राप्त हुए और पीयूष मिश्रा (अभिनेता और लेखक) ने जब अपनी ही कविता 'प्रेमिकाओं के नाम' पढ़ी तो 86,000 से भी अधिक व्यूज (views) प्राप्त हुए। ये परिणाम अविश्वसनीय थे।

हिंदी कविता के कुछ और प्रमुख यू–ट्यूब चैनल –

2) मेरी कलम से – मो0 उजेर अली (यू–ट्यूब चैनल)

3) कविता वचन – दिप्ती चौबे (यू–ट्यूब चैनल)

4) द क्लासिक हिंदी पोयट्री – रोहित धमीजा

5) फ्रैश हिंदी पोयट्री – अरिहंत जैन

● **दूरदर्शन व टी. वी. चैनल्स के माध्यम से–**

आज दूरदर्शन भी कविता के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विगत कुछ वर्षो में अनेक टी. वी. चैनल व दूरदर्षन के माध्यम से कविता आम जन तक पहुँची है। टी. वी. पर प्रसारित होने वाले अनेक कार्यक्रम जैसे– 'वाह वाह क्या बात है', और 'बहुत खूब' जैसे अनेक कार्यक्रम समय–समय पर चैनलों पर प्रसारित होते रहते हैं। जिसके कारण कविता हर रोज कुछ नए चाहने वालों के बीच पहुंच रही है।

● **कुछ अन्य माध्यम–**

1) हिंदी आडियो चैनल्स
2) हिंदी वीडियो चैनल्स

निम्नलिखित आरेख के माध्यम से भी इसे सरलता से समझा जा सकता है -

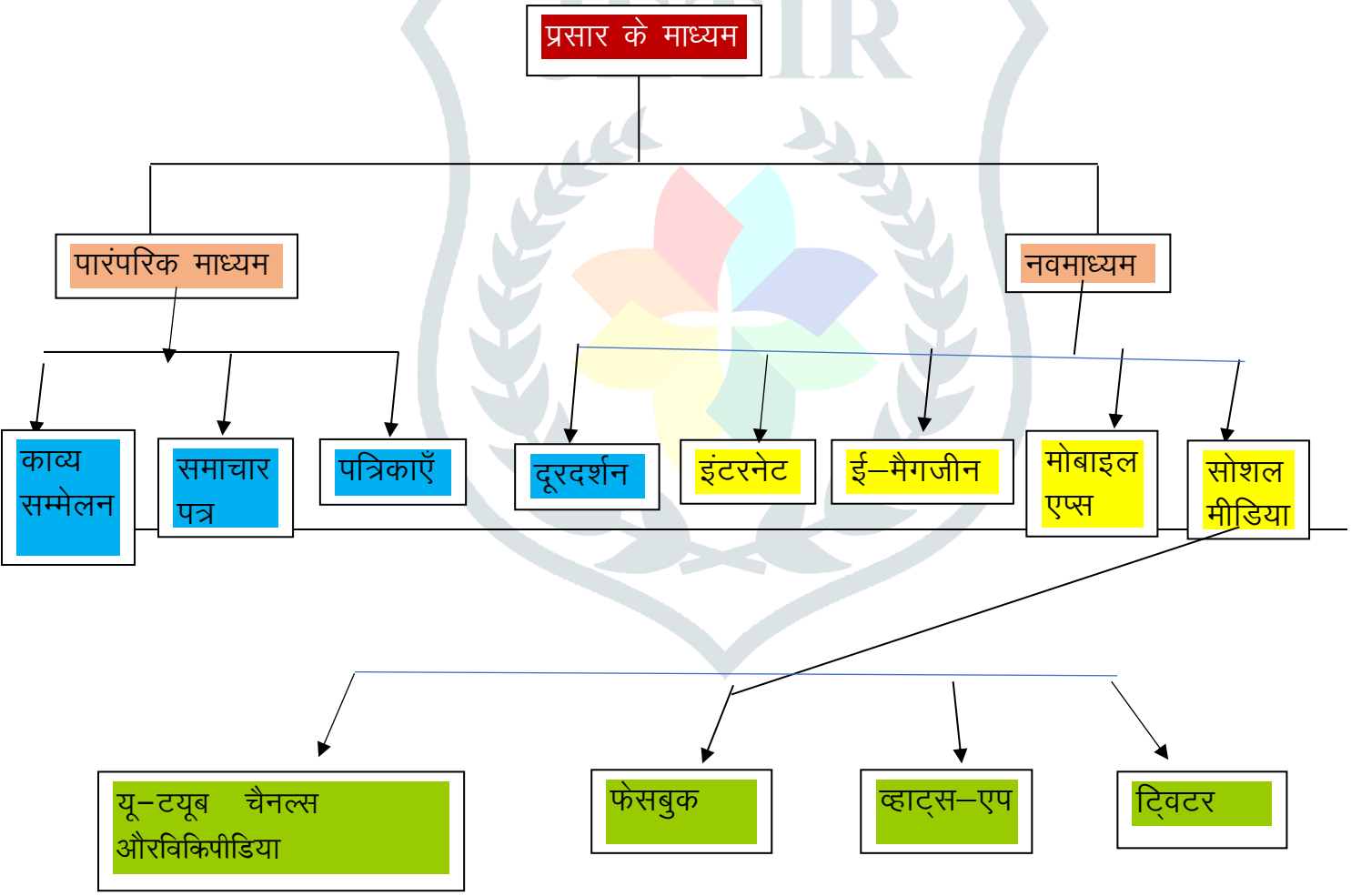

निष्कर्ष – वर्तमान समय में कविता जिस द्रुतगति से प्रसार के नए–नए माध्यमों से जुड़कर लोकप्रियता के नित नए–नए आयामों को छू रही है, निश्चित ही इन माध्यमों ने उसमें जैसे प्राण (संजीवनी शक्ति) को संचारित कर दिया है। वह विशिष्ट वर्ग से निकलकर आम आदमी तक अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुई है। प्रसार के नए–नए माध्यमों की खोज प्रक्रिया अभी भी जारी है। जिससे आज की कविता अपने सम्पूर्ण पल्लवन की ओर अग्रसारित हो रही है।

सन्दर्भ –

1) आर. एस. नंदा–सागर आक्सफोर्ड डिक्शनरी, सागर बुक कंपनी,पंचशील गार्डन, नई–दिल्ली, पृष्ठ–174

2) डॉ. नकछेद, समकालीन हिन्दी कविता में जनवादी चेतना, पृष्ठ–14

इंटरनेट स्रोतः–

3. www.hindinideshalaya.nic.in

4. http://www.quora.com

5.http://wwwbharatdarshan.co.n2/collection/articles/41/poetry.html

6.kavitakosh.org/

7.https://delhipoetry slam.com

8.kavayalaya.org/